अध्याय- द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय - द्वितीय
संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

किसी भी क्षेत्र मे अनुसंधान की प्रक्रिया मे संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अत्यंत आवश्यक है। शोधकार्य के अंतर्गत शोध संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक एवं अनिवार्य प्रक्रिया है। वर्तमान ज्ञात की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान को आगे बढाया जा सकता है। संबंधित साहित्य पुस्तकों, ज्ञातकोषो, पत्र पत्रिकाओ, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधो एवं अभिलेखो आदि से है। जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन परिकल्पनाओ का निर्माण अध्ययन की रुपरेखा आदि तैयार करने एवं अनुसंधान कार्य को उचित दिशा मे बढाया नही जा सकता जब तक अनुसंधानकर्ता को ज्ञान न हो जाये कि उस क्षेत्र मे कितना कार्य हो चुका है। तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही दिशा मे सफल हो सकता है।

एक कुशल चिकित्सक के लिये यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र मे हो रही औषधि संबंधी आधुनिकतम के क्षेत्र मे कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिये भी उस क्षेत्र मे सूचनाओ से परिचित होना आवश्यक है।

2.2 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन का महत्व

संबंधित साहित्य व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है, क्योंकि ज्ञान के क्षेत्र मे विस्तार के लिये यह आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञान हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहां जाना है, वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान को आगे बढाया जा सकता है।

2.2.1 समस्या से संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओ का पता लगता है।

2.2.2 सत्यापन करने के लिये कुछ अनुसंधानो को नवीन दिशाओ मे करने की आवश्यकता होती है।

2.2.3 किसी अनुसंधानकर्ता के पूर्व मे वही अनुसंधान कार्य किया जा चुका हो तो हमारे प्रयास निर्रथक साबित होगा। अतः संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन हमारे अनुसंधानकर्ता के प्रयास को सार्थकता प्रदान करता है। इससे अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध मे अनादृष्टि प्राप्त होती है।

2.3 समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

शोध विषय के अध्ययन हेतू शोधार्थी दवारा इस समस्या पर किये गये शोधो का अध्ययन कर निम्न जानकारी प्राप्त की गयी है।

टोविन (1971) ने प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षको का दृष्टिकोण विध्यार्थी के प्रति अभिवृत्ति की समस्या का अध्ययन किया और उनके अनुसार निष्कर्ष पाया गया कि प्रशिक्षित शिक्षक सामान्य कक्षा मे दृष्टहीन विध्यार्थी को कक्षा मे स्वीकार नही कर पा रहे थे।

सिंह (1987) सिंह (1987) के दवारा बिहार के विध्यालयो मे अध्ययनरत शारीरिक विशिष्ट विध्यार्थियो के लिये प्रदान समावेशी शिक्षा सुविधाओं का मुल्यानात्मक अध्ययन किया गया और उनकी अभिवृत्ति का भी अध्ययन किया गया। जिसमे विध्यालय मे उपलब्ध सुविधाओं के प्रति विध्यार्थी उत्साहित नही पाये गये एवं उद्देश्य प्राप्ति हेतू स्त्रोतो की केवल 33 प्रतिशत उपयोगिता प्राप्त हुई। शारीरिक विशिष्ट विध्यार्थियो का अपने परिवारों से उत्तम सामंजस्य प्राप्त हुआ। किंतु शारिक विशिष्ट विध्यार्थियो एवं अन्य

विध्यार्थियो मे संचार की कमी पायी गयी, साथ ही शिक्षक के दवारा इस अंतराल को कम करने के लिये किये गये प्रयास मे भी कमी पायी गयी।

देशमुख (1994) ने समेकित शिक्षा प्रयोजन के अंतर्गत माध्यमिक विध्यालय स्तर पर विशिष्ट एवं सामान्य छात्रःछात्राओ का नवीनता का तुलनात्मक अध्ययन किया और उनके अनुसार निष्कर्ष पाया गया कि विशिष्ट छात्रो मे प्रवाहशीलता सामान्य छात्रो की अपेक्षा अधिक पायी गयी। लिंग तथा विशिष्टता के मध्य सम्मिलित रुप से अंतक्रियाओ के प्रभाव मे सार्थक अंतर है।

गलीस (1994) जार्जिया राज्य मे विशेष और नियमित शिक्षको की अभिवृत्ति और विश्वासो पर अध्ययन किया गया तो यह पाया गया कि ज्यादातर उत्तर दाताओ ने जोरदार सहमति व्यक्त की, कि किसी विशेष निर्देश पर्यावरण से लाभ लेने वाले छात्रो के लिये संशोधनो को बनाना महत्वपूर्ण है। उनका यह भी मानना था कि विशिष्ट विध्यार्थियो के लिये विशेष शिक्षा एक मूल्यवान सेवा प्रदान करती है।

गुप्ता (1997) ने अध्यापको के लिये समावेशी शिक्षा दर्शिका विशेष आवश्यकता वाले विध्यार्थियो की सहायता हेतू राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद भोपाल शिक्षण सामग्री मार्गदर्शिका का विकास किया।

तिवारी (1997-98) ने भारत के मध्यप्रदेश राज्य के भोपाल शहर के सामान्य तथा विशिष्ट विध्यार्थियो की समेकित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया और उनके अनुसार निष्कर्ष पाया गया कि दृष्टहीन व सामान्य विध्यार्थी की सकारात्मक अभिवृत्ति है। क्योंकि विध्यार्थी की विशिष्टता जन्मजात एवं दुर्घटनावश हो सकती है, और विशिष्ट भी अध्ययन करना चाहते है। जिसमे विशिष्टता बाधक नही है।

मैंडेज (1998) ने शिक्षकों की कथित भूमिका तनाव, आत्मनिर्भरता का अनुभव, और समावेशी शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण पर शोध आधारित प्रभावी शिक्षण व्यवहार के लिए सहायता का अध्ययन करने के लिए एक अध्ययन किया। अध्ययन

के परिणाम से यह संकेत मिलते है कि शोध आधारित प्रभावी शिक्षण व्यवहार के लिए समर्थन का न केवल भूमिका तनाव के माध्यम से एक अप्रत्यक्ष प्रभाव था, बल्कि इसके पर भी सबसे सीधा प्रभाव पड़ा। समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों का व्यवहार यह देखते हुए कि रिश्ते और व्यवहार के बीच एक रिश्ता मौजूद है, शामिल किए जाने वाले मुद्दों के संबंध में शिक्षकों के व्यवहार विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के साथ उनकी बातचीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे और इसलिए इन छात्रों के अनुभव की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं।

ट्रेडर (1998) अध्यापक, शिक्षक की प्रभावशीलता और विशेष जरूरतों वाले विध्यार्थियो के प्रति शिक्षक की व्यवहार - समावेशी शिक्षा के लिए निहितार्थ अध्ययन के परिणामों ने उचित छात्र व्यवहार उनकी कक्षाओं में एक सफल समायोजन के लिए बहुत महत्वपूर्ण समझा गया है, और अनुचित और दुर्भावनापूर्ण छात्रों के व्यवहार को उनकी कक्षाओं में अस्वीकार्य माना गया। अध्ययन में यह भी पाया गया कि अधिक प्रभावी शिक्षकों ने विशेष जरूरतों वाले छात्रों के साथ अधिक से अधिक बातचीत का संकेत दिया और उनके स्कूलों में समावेशी प्रथाओं को बढ़ावा देने के एक उच्च स्तर का संकेत दिया।

बाररामाटो (1998) ने इस बात का पता लगाया कि किस तरह स्कूल और संसाधन, अभिभावक और शिक्षक अभिवृत्ति, सेवा प्रशिक्षण में, और योजना के रूप में समर्थन करता है, बचपन के स्तर पर विशिष्ट विध्यार्थियो के सफल समावेशन में योगदान देता है। परिणाम- विध्यार्थियो को सामाजिक रुप से एकीकृत किया गया था और उनको समायोजित किया गया था। सभी शिक्षकों और अभिभावकों ने निश्चित कारकों की पहचान की है जिन्हें नियमित कक्षाओं में विध्यार्थियो को सफलतापूर्वक एकीकृत करने के लिए होना चाहिए। शिक्षकों की सहायता के महत्व, समर्थन सेवाओं में वृद्धि, शिक्षकों और छोटे वर्ग के आकार के लिए सेवा प्रशिक्षण में उचित बल दिया गया।

स्टूबेर, गेटटिंगर और गोएट्ज (1998) ने अपने अध्ययन में पाया कि प्रैक्टिशनरों (विशेष शिक्षकों, नियमित शिक्षकों, समर्थन सेवाओं के कर्मियों) को शामिल करने के बारे में विश्वास उनके स्तर की शिक्षा,

प्रशिक्षण और अनुभव के वर्षों से प्रभावित थे। जिन शिक्षकों को कम से कम विशेष प्रशिक्षण दिया गया था, वे कम से कम गंभीर विशिष्ट विध्यार्थियो के साथ काम करने के लिए तैयार थे, जो विशेष प्रशिक्षण वाले थे। उन्होंने सुझाव दिया कि चिकित्सकों के लिए संचार कौशल और टीमवर्क प्रशिक्षण में वृद्धि होनी चाहिए और उन्हें सहकर्मी के समर्थन और चल रहे अवसरों की आवश्यकता हैं।

यूएन और वेस्टवुड (2001) ने हंकांग माध्यमिक विध्यालयों में विशेष जरुरतों वाले विध्यार्थियो को समेकित करने पर अध्ययन किया शिक्षकों के व्यवहार और मार्गदर्शन प्रशिक्षण के लिये उनके संभावित परिणामों ने सुझाव दिया कि शिक्षकों ने एकीकरण की नीति के प्रति विशेष रुप से अनुकूल या सहायक अभिवृत्ति नही बनाए। जबकि बहुमत ने अंतर्निहित सिध्दांतो का समर्थन किया है कि यह नियमित कक्षा में सीखने का हर विध्यार्थी का अधिकार है, अधिकांश ऐसे व्यावहारिकताओं के बारे में अनिश्चित है। विशेष रुप से नकारात्मक व्यवहार उनकी समस्याओं के साथ छात्रों को समेकित करने के बारे में व्यक्त किये गए थे, और विशिष्ट कठिनाईयों वाले मानसिक बाधाओं के साथ सबसे सकारात्मक व्यवहार शारीरिक अक्षमताओं और भाषण समस्याओं वाले छात्रों को एकजुट करने के लिये व्यक्त किये गए थे।

रॉस, सुसन (2002) ने अध्ययन में सूफ़ोक काउंटी (न्यूयार्क) स्कूल जिले में 30 नियमित और विशेष माध्यमिक विध्यालय के शिक्षकों की क्षमता की पूरी तरह समेकित में विशेष आवश्यकताओं वाले विध्यार्थियो को शिक्षित करने की भावनाओं की जांच की। उन दोनों को एक दो प्रश्नावली प्रदान की गई थी जिसमें शिक्षकों के लिए उनकी प्रशिक्षण और समर्थन की पर्याप्तता के बारे में शिक्षकों के लिए जनसांख्यिकीय और प्रशिक्षण पृष्ठभूमि की जानकारी शामिल थी। अध्ययन के निष्कर्ष यह थे कि आम तौर पर शिक्षकों को समेकित शिक्षा में विशेष जरूरतों वाले विध्यार्थियो को सिखाने में सक्षम थे, विशेषकर अनुभवों में पर्याप्त प्रशिक्षण और समर्थन शामिल थे इसमें आगे कहा गया है कि विध्यार्थी

की विशिष्टता की तीव्रता बढ़ने के कारण, शिक्षकों की योग्यता कमजोर हो जाती है।

शर्मा (2002) ने विशिष्ट के प्रति शिक्षकों के व्यवहार का विश्लेषण किया, यह अभिवृत्ति कारकों से संबंधित है, और शिक्षकों के व्यवहार में बदलाव लाने के तरीके। उसने बताया कि सामान्य वर्ग में एसईएन के साथ विध्यार्थियो को शामिल करने के लिए शिक्षकों की इच्छा विध्यार्थियो की अक्षम शर्तों पर निर्भर करती है। शिक्षकों के पास विशिष्ट विध्यार्थियो के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति थी। आर्टिस्टस बौद्धिक दृष्टि से कमजोर थे और जिनके साथ व्यवहार समस्याओं, गतिरोध और बौध्दिक अक्षमता के मामले में समस्याओं की गंभीरता ने उनके कक्षा मे विशिष्ट विध्यार्थियो को शामिल करने की दिशा में अपनी अभिवृत्ति को नकारात्मक रुप से प्रभावित किया। अधिकांश शिक्षकों ने स्कूल और कक्षा के बुनियादी ढांचे मे बदलाव की आवश्यकता महसूस की। अभिवृत्ति सामान्य विध्यार्थियो को बढाने वाले शिक्षकों की उम्र और अनुभव से व्यतिकृत होना हालांकि, विशिष्ट के साथ काम करने का अनुभव सकारात्मक तौर पर शिक्षकों के व्यवहार से संबंधित था। अपने शिक्षक वर्गों के मुकाबले विशिष्ट वर्गों की तुलना में महिला शिक्ष अधिक सकारात्मक थे। विज्ञान के शिक्षकों को मानविकी के विषयों की तुलना में शामिल करने में एक अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति थी। शिक्षण रणनीतियों के उपयोग में जितना आत्मविश्वास विशिष्ट की ओर शिक्षक का सकारात्मक अभिवृत्ति आवश्यक है।

चोपडा (2003) के दवारा समावेशी शिक्षा प्रति प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों की अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारक विषय पर अध्ययन किया गयें उनके निष्कर्ष के अनुसार समावेशी और बहिष्कार के बीच की खाई को दूर करने के लिये शिक्षक, अभिभावको, समाज प्रशासकों और सरकार सामुहिक रुप से समावेशी शिक्षा की नीतियों को लागू करने के लिये काम करना चाहिए।

अधिकांश शिक्षक विशिष्ट छात्रों को शामिल करने के लिये सहमत है। शिक्षकों की योग्यता अनुभव लिंग और प्रबंधन के स्तर के आधार पर व्यवहार मे अंतर है।

ब्रैडशॉ एट अल (2004) ने संयुक्त अरब अमीरात में चिंताओं, व्यवहार और आकांक्षा के संबंध में विशेष शिक्षा का अध्ययन किया। संयुक्त अरब अमीरात के नियमित स्कूलों में विशेष जरूरतों वाले विध्यार्थियो के एकीकरण के लिए शिक्षकों और पूर्व सेवा शिक्षकों के व्यवहार के बारे में चल रहे एक अध्ययन के बारे में चर्चा हुई है। जैसा कि देश एक राष्ट्र के रूप में परिवर्तन की अपनी नाटकीय अवधि जारी रखता है, विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा में बदलाव तेजी से बढ़ेगा।

चांग (2005) विशिष्ट विध्यार्थियो के प्रति पूर्व स्कूली शिक्षकों की धारणा और जरूरतों के बारे में पता चला है। विशेष जरूरतों वाले युवा विध्यार्थियो के प्रति पूर्व स्कूली शिक्षक का व्यवहार सकारात्मक समय के माध्यम से चला गया। विध्यार्थियो को बेहतर सेवाएं प्रदान करने के लिए, पूर्व स्कूली शिक्षाविदों ने कुछ बदलाव किए, जिससे विभिन्न जरूरतों वाले विध्यार्थियो का व्यवहार और अपेक्षाएं कक्षा प्रबंधन का समायोजन आत्म-सशक्तिकरण विध्यालय से सहायता प्रदान करते हैं। विशेष जरूरतों वाले विध्यार्थियो को शिक्षित करने के संबंध में, शिक्षकों को कुछ बाधाओं का सामना करना पड़ता है। पाठयक्रम समायोजन और कक्षा प्रबंधन के बीच कठिनाइयों, समस्या सुलझाने में प्रशिक्षण की कमी, स्कूल भागीदारों से प्रभावी सहायता की कमी, अनुभव के माध्यम से, पूर्व स्कूली शिक्षकों की अपेक्षा है कि प्रभावी प्रशिक्षण के अवसर स्कूल आधारित सहायता उपलब्ध कराना चाहिये।

जेसी एट अल (2005) ने शिक्षक की धारणाओं की जांच की, विशेष आवश्यकता वाले विध्यार्थियो के लिए एक कार्यात्मक पाठयक्रम क्या होना चाहिए। यह पाया गया है कि बौद्धिक विशिष्ट के लिए पाठयक्रम की योजना आगे की जानी चाहिए, छात्रों के वर्तमान और भविष्य की जरूरतों पर विचार-विमर्श करना, उन वातावरणों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए जिसमें स्कूल छोड़ने के बाद व्यक्तियों को अनुकूलन और कार्य करने की अपेक्षा की जाएगी।

संथी एस.पी. (2005) के दवारा स्कूलो मे श्रवन बधित विध्यार्थियो का समावेश शिक्षा शिक्षकों की अभिवृत्ति पर एक सर्वेक्षण किया गया उनके

निष्कर्ष के अनुसार छात्रों के लाभ के लिये रणनीतियों को स्कूल मे लागू किया जाना चाहिये।

अधिकांश शिक्षक विशिष्ट छात्रों को शामिल करने के लिये सहमत है। शिक्षकों की योग्यता अनुभव लिंग और प्रबंधन के स्तर के आधार पर व्यवहार मे अंतर है।

अली, मुस्तफा और जेलस (2006) ने मलेशिया में विशेष जरूरतों वाले विध्यार्थियो की शिक्षा के प्रति शिक्षकों के अनुशासन पर अनुभवजन्य अध्ययन पर आयोजित किया। मुख्य खोज से पता चलता है कि, सामान्य तौर पर, शिक्षकों को विशेष जरूरतों वाले बच्चों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है कि मुख्यधारा और विशेष शिक्षा के शिक्षकों के बीच सहयोग महत्वपूर्ण है और इसमें समावेशी शिक्षा के कार्यान्वयन के लिए एक स्पष्ट दिशानिर्देश होना चाहिए। अध्ययन के निष्कर्षों में स्कूल के प्रशासकों, शिक्षकों और अन्य हितधारकों के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं, जो समावेशी शिक्षा को लागू करने में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से शामिल हैं।

कथिरिया (2007) ने समावेशी शिक्षा के प्रति जूनागढ जिले के विध्यालयों का अध्ययन किया जिसमे उनके अनुसार शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करने की आवश्यकता है।

गाद और खान (2007) ने निजी क्षेत्र में विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले छात्रों को शामिल करने के लिए प्राथमिक मुख्यधारा के शिक्षकों के अभिवृत्ति पर एक अध्ययन किया। अध्ययन के प्रमुख निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि संयुक्त अरब अमीरात में दुबई में प्राथमिक मुख्यधारा के शिक्षकों का सामना करने वाली मुख्य चुनौतियों में से एक वर्तमान शैक्षणिक आंदोलन से शामिल किए जाने की वजह से पैदा होती है। यह एक अंतरराष्ट्रीय घटना है, एक प्रक्रिया जो नियमित कक्षाओं में विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले छात्रों को विशेष शिक्षा सेवाएं प्रदान करने पर जोर देती है। इन शिक्षकों के साथ छात्रों को महसूस किया। विशेष शैक्षिक

आवश्यकताओं को मुख्य धारा के नियमित कक्षा पाठयक्रम सामग्री में मास्टर करने के लिये आवश्यक कौशल की कमी है। शिक्षकों ने यह भी व्यक्त किया कि मुख्य धारा कक्षा में भारी शिक्षण भार निजी क्षेत्र में विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं के साथ छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करना कठिन बना देता है। हालांकि परिणामों से संकेत मिलता है कि शिक्षक मुख्यधारा की शिक्षा में विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं के साथ अपने छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये अतिरिक्त प्रशिक्षण प्रशासको का समर्थन और संबंधित सेवाओं और संसाधनो तक पहुंच का अनुभव करते है।

कल्याव एट अल 2007) 42 सर्बियाई अध्यापकों के शामिल होने के प्रति व्यवहार से अध्ययन किया। यह पाया गया कि सर्बियाई शिक्षक एसएन के साथ बच्चों को शामिल करने की दिशा में थोड़ा नकारात्मक नजर रखते हैं, ऐसे शिक्षकों के साथ जो इस तरह के अनुभव के बिना शिक्षकों की तुलना में एस.ए.एन. वाले बच्चों को शिक्षित करने में अनुभव करते हैं। अध्यापकों के अनुभव के अनुसार उनके शामिल होने के लिए शिक्षकों के व्यवहार में कोई मतभेद नहीं देखा गया।

गुलाब एट अल (2007) विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए समावेशी शिक्षा की ओर एस्टोनियाई व्यावसायिक शिक्षकों का व्यवहार की जांच की कि जब एस्टोनियन व्यावसायिक स्कूलों में सबसे अधिक शिक्षकों में विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं के साथ छात्रों के अधिक से अधिक शामिल होने की दिशा में सकारात्मक अभिवृत्ति दिखती है, तो इन विध्यालयों की तत्परता के संबंध में मौजूदा पाठयक्रमों पर इस तरह के विध्यार्थियों को स्वीकार करने के लिए चिंताएं रहती हैं। समावेशी अभ्यास को बढ़ावा देने में शिक्षकों का प्रशिक्षण एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभर आता है और प्रशिक्षण पाठयक्रमों के माध्यम से शिक्षकों के एक दल को प्रदान किए गए समर्थन का प्रमाण है जो सकारात्मक प्रभाव और उम्मीदों को प्रभावित करता है।

हैदर, सोनिया इजाज (2008) विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले छात्रों को शामिल करने के बारे में पाकिस्तानी शिक्षक की अभिवृत्ति पर अपने

अध्ययन में पचास मुख्यधारा के कक्षा शिक्षक (48 महिलाएं दो पुरुष) और चार स्कूलों के 50 विशेष शिक्षा शिक्षकों (47 महिलाएं और तीन पुरुष) लाहौर का अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षक थे, समावेशी शिक्षा की ओर सकारात्मक अभिवृत्ति वे इस बात से सहमत है कि यह सामाजिक संपर्क को बढाता है, इस लिये विशेष आवश्यकताओं वालें छात्रो के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति को कम करता है, कि मुख्य धारा और विशेष शिक्षा के बीच सहयोग महत्वपूर्ण है। अध्ययन के स्कूल प्रशासक, शिक्षको और अन्य हितधारको के लिये महत्वपूर्ण निहितार्थ है, जो समावेशी शिक्षा को लागू करने मे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप से शामिल है।

स्मिथ और आचार्य (2010) विशिष्ट के लिए समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों के व्यवहार पर अपने अध्ययन में पाया गया कि शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति प्रतिकूल अभिवृत्ति है।

रैफरटी एंवं ग्रिफिन (2010) ने शिक्षक की अभिवृत्ति और शैक्षिक उपलब्धि पर साहित्य की समीक्षा पर अध्ययन किया उनके अनुसार प्रोफेशनल विकास समय और सहयोग के लिये आवश्यक है। परंतु पर्याप्त एक समावेशी वातावरण मे शिक्षा में सुधार के लिये शिक्षण विधियों का उपयोग कर रहे है। समावेशी शिक्षा की कमियों के लिये अनुसंधान किये जाते है।

खान (2011) ने माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों में अभिवृत्ति और ज्ञान के प्रति बांग्लादेश में समावेशी शिक्षा का अध्ययन किया और पाया कि इसमे शिक्षण समाग्री की कमी पायी गई। माध्यमिक स्कूल के शिक्षको का शारीरिक रुप से विशिष्ट विध्यार्थियो को छोडकर विशेष आवश्यकता वाले विध्यार्थियो के लिये शिक्षा की दिशा मे सकारात्मक अभिवृत्ति थी। समावेशी शिक्षा के सफलता के लिये अपर्याप्त ज्ञान प्रशिक्षण की कमी है और शिक्षण सामग्री की कमी है।